



पीली गुलमोहर

खींचे की खिड़की

दिनेश चिवालकर

## रंगीन फूलों, घोंसलों और प्लास्टिक कचरे का मौसम

खिड़की खोलते ही कमरे में लाल-पीली झाँई फैल गई। यह सुबह की लालिमा नहीं बगीचे में खिले गुलमोहर और अमलतास से उछलकर आती रोशनी थी। जहाँ ठण्ड मौसमी फूलों की ऋतु है, वहीं अप्रैल-मई की गर्मी पेड़ों को रंगीन बनाने का मौसम है – पांगर या कोरल, गुलमोहर, नीली गुलमोहर (जेकेरेण्डा), कचनार, पीली गुलमोहर, अमलतास। जंगल की ओर निकल जाओ तो पलाश और सेमल खिले मिलेंगे। इनके रंग इतने सुख हैं कि इन्हें “जंगल की आग” कहना ठीक ही लगता है। छाँव में पनपता है हरापन और रात में घाँदनी में चमकते हैं सफेद फूल। लेकिन रंगों को चाहिए कड़ी धूप। सुबह टहलने निकलो तो पेड़ों के नीचे झरी पंखुड़ियाँ चुनकर किताबों के पन्नों में दबाकर रख लेना। दोस्तों को लिखने लायक कुछ सूझ न पड़े तो कार्ड पर कुछ पंखुड़ियाँ धिपकाकर भेज देना। क्या खूब कार्ड बनेगा!

इन दिनों पक्षी सुबह-सबरे झलक दिखाकर पत्तों-झुरमुटों में गायब हो जाते हैं। मिट्टी के तसले में पानी भरकर बगीचे में रख दो। गौरैया, बुलबुल, शकरखोरा, फुदकी, दर्ज़िन वगैरह वहाँ हाज़िरी देंगे। नहाने के शौकीन जो ठहरे ये सब। पानी ताज़ा भरा होना ज़रूरी है। कचरा गिरे बासी पानी में नहीं नहाएँगे वो। तसले के ऊपर टपकती मटकी की टप-टप हो तो और भी अच्छा। नहाने के बाद पंख फड़फड़ाना और चोंच से पंख संवारना इनका प्रिय शगल है। पानी छिटकने के लिए गौरैया का इतनी जोर से सिर हिलाना एक और पहेली सुलझाता है। तिनकों से बने इनके घोंसलों के अन्दर प्यालेनुमा गोलाईयों किस तरह बनती हैं? तस्वीरों के पीछे, रोशनदान में घास-फूस का ढेर जमा कर गौरैया उसमें अपना सिर रगड़ती है और उसे मनचाहा आकार देती है।

मार्च से घोंसला बनाने का जो सिलसिला शुरू हुआ है, वह

बारिश आने तक चलेगा। कुछ पक्षी एक बार अण्डे देंगे तो कुछ दो बार। पक्षी खूब जानते हैं कि खुले में बच्चों को बड़ा करने में क्या दिक्कतें आ सकती हैं। मार्च में यदि ठण्ड लौट आने की सम्भावना हो तो पक्षी घोंसला बनाने का काम अधूरा छोड़ देते हैं जब तक कि मौसम में गर्मी ना आ जाए। फिर भरपेट कीड़े-मकोड़े भी तो इसी समय मिलते हैं।

आम आ गया है और साथ-साथ पपीता, तरबूज, संतरे भी बाज़ार में हैं। ये सारे रंगीन फल हैं। रंगीन तो हरी सब्जियाँ भी हैं। इन्हें खाना तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा है क्योंकि ये शरीर में छुट्टे घूमने वाले तत्वों (फ्री रेडिकल्स) के दुष्प्रभावों को कम कर देते हैं। कई लोग सोचते हैं कि विटामिन की गोलियाँ खा लेने से काम चल जाता है। ऐसा नहीं है। वैज्ञानिक मानते हैं कि शरीर के लिए ज़रूरी बीटा केरोटीन, विटामिन ई और ए फल-सब्जियों से ही लेना चाहिए। गोलियाँ नुकसान पहुँचाती हैं।

फूल-पौधों के अलावा बगीचों-सड़कों-मैदानों में रंगीनी फैलाने वाली एक और चीज़ है – प्लास्टिक का कचरा, रंगीन थैलियाँ। ये पेड़ों या आकाश से नहीं बल्कि हमारे हाथों से गिरती हैं। “ओशन कंज़र्वेसी” नाम की एक संस्था के 3,78,000 स्वयंसेवकों ने 76 देशों के समुद्र किनारों से कचरा बीना। हिसाब लगाया तो पता चला कि वहाँ एक दिन में 30 लाख किलो कचरा इकट्ठा होता है। इस कचरे में कोई 72 लाख किस्म की वस्तुएँ मिली हैं। अनजाने में हमारे



यह लखनऊ की एक सड़क है। इसे देख तुम्हें अपने शहर की कई सड़कें याद आ गई होंगी ना? इसके लिए कौन जिम्मेवार है?

फोटो: दिनेश रस्तोगी

द्वारा फेंकी गई चीज़ें – रिबन, डोरियाँ, जालियाँ – पानी में रहने वाले प्राणियों की जान ले सकती हैं।

ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर की नगरपालिका ने लोगों के घर के बाहर रखे कूड़ेदान पर इलेक्ट्रॉनिक टैग लगाने का प्रयोग किया है। इससे उनके द्वारा पैदा किए जाने वाले कूड़े के प्रकार और मात्रा का हिसाब रखा जा सकेगा। हो सकता है इस आधार पर उन लोगों पर टैक्स भी लगाया जाए। तब तो भारत में सबसे ज़्यादा टैक्स या जुर्माना खाली प्लॉट का वह मालिक चुकाएगा जिसने उस पर मकान नहीं बनाया है। सारे पड़ोसी कचरा जो वहाँ फेंकते हैं।



चकमक • जून 2008

ग्राहक ने दुकानदार से कहा, “मुझे एक चूहेदानी चाहिए।”

“अभी लाया साहब,” कहकर उसने चूहेदानी की तलाश में निगाह दौड़ाई।

उतावली से ग्राहक ने बाहर झाँका। बस स्टैण्ड पर बस रुक रही थी। उसने जल्दी मचाई, “जल्दी करो। मुझे बस पकड़नी है।”

दुकानदार बोला, “माफ करना, इतनी बड़ी चूहेदानी तो हमारे पास नहीं है।”